परती से चारे तक का सफर

सामूहिक अभियान के तहत प्राकृतिक कृषि पद्धति द्वारा पशु भोजन (चारा) संकट का निवारण

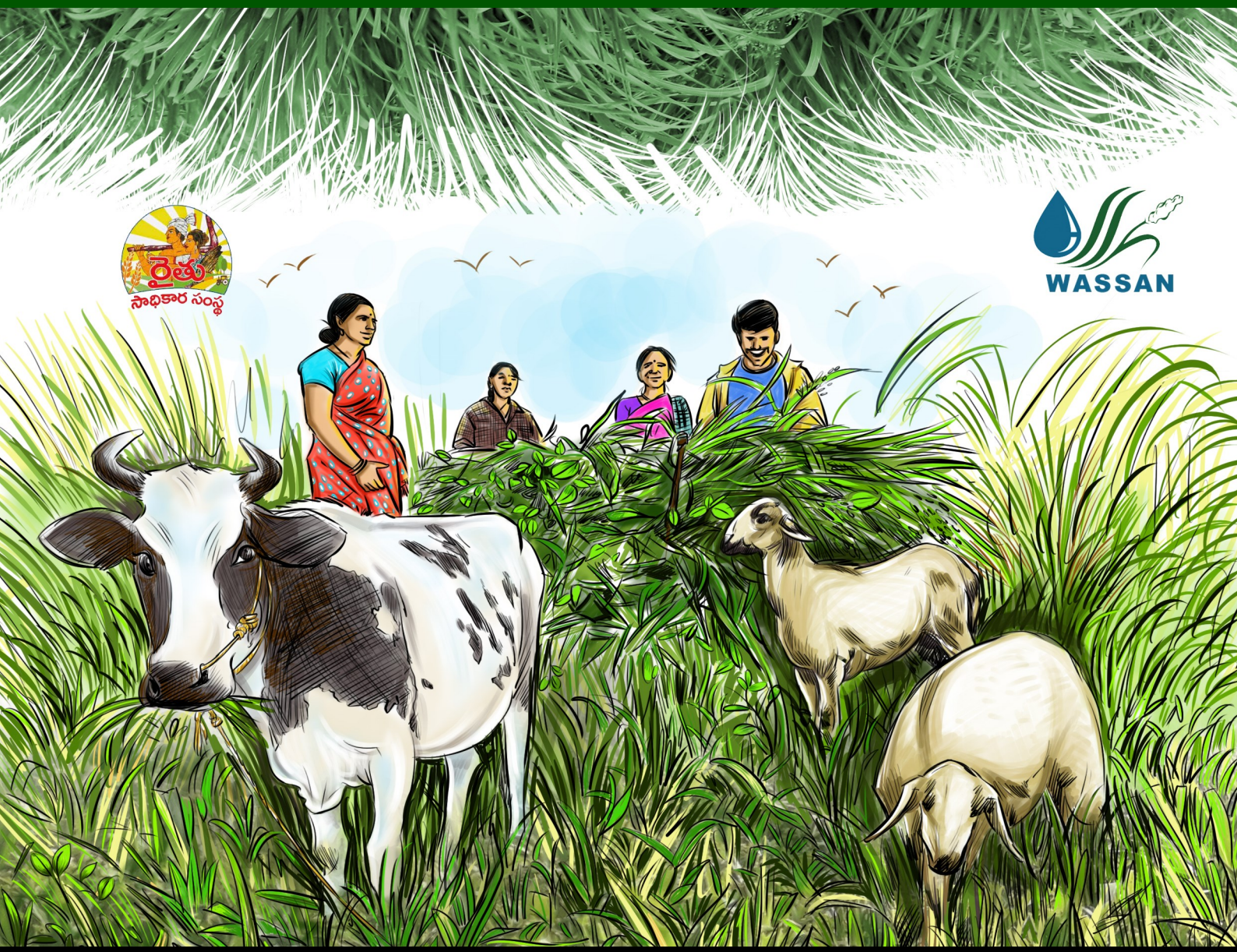

अय्यावरिपल्ली गांव चारे की कमी से पर्याप्तता तक पहुंची?

CRZBNF
2018 - 19

कमी से पर्याप्तता तक.....

पशु भोजन (चारा) संकट का निवारण : एक सामूहिक अभियान --- अय्यावरीपल्ली गाँव ने दिखाई राह

महज तीन साल पहले तक भी ये गाँव पशु भोजन(चारे) से रिक्त था और प्रधान रूप से बारिश पर ही निर्भर था और अधिकाँश गांववासी चारा बाहर से खरीद कर ज़रुरत पूरी करते थे। सटीक विश्लेषण, दूरदर्शिता और स्पष्ट सामूहिक अभियान के चलते आने वाले संकट को परास्त कर, एक ऐसी योजना बनाई गयी जिसने परिस्थति को खुशहाली में बदल दिया। आज अय्यावरीपल्ली एक ऐसा गाँव बन गया है, जो कि ना केवल चारा का उत्पादन पर्याप्त मात्रा में करता बल्कि आस-पास के गाँवों की भी आपूर्ति करता है। इस प्रगतिशील गाँव ने चारे की कमी की समस्या को सुलझाने के साथ-साथ और भी कई मानार्थ लाभों को साधा है। आजकल वहां के किसान उनके द्वारा दूध की आपूर्ति की दैनिक रसद को भी सांझा करते हैं - जो दूध में वसा के ज्यादा होने के कारण किसानों को अधिक मूल्य मिल रहा है- इस बात को दर्शाती है : और पशुधन की प्रजनन क्षमता में अधिकता और जुगाली करने वाले डांगर के वज़न में इजाफे का संकेत भी देते हैं। कुछ समय पहले तक जो परती ज़मीन थी वो चारागाह में परिवर्तित हो गयी है और ऐसे कई क्षेत्रों की उर्वरा शक्ति को बढ़ाकर उन्हें पुनः खेती योग्य बनाया गया है। आंध्रप्रदेश के चित्तूर ज़िले के अय्यावरीपल्ली गाँव में , जो कि कुछ समय पहले तक मुख्यतः सिंचाई के लिए बारीश पर निर्भर था ,उस गाँव की परती भूमि को , बहु प्रजाति पशु भोजन विकास प्रणाली के चलते प्राकृतिक खेती पद्धतियों द्वारा नए आयाम जुड़े हैं।

अय्यावरीपल्ली मुख्यतः दूध आधारित अर्थव्यवस्था पर आधारित है।ये गाँव चित्तूर ज़िले के वायलपाडु / वाल्मीकीपुरम मंडल में स्थित है। इस गाँव के सभी घरों में दुधारू गाय हैं । दूध व्यापार के कारण से जैसे जैसे अर्थव्यवस्था में वृद्धि होने लगी , तब से समय के साथ साथ देसी नस्ल की गायों का स्थान 'जर्सी' गाय और अन्य नस्लों ने ले ली। और 'स्टाल फीडिंग' (बाड़े में रखकर गायों का रख रखाव) 'पद्धति को भी अपनाया। अंततः चारा इस गाँव की अर्थव्यवस्था और पारिस्थितिकी तंत्र (इकोसिस्टम) का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया।

बहु फसली खेती प्रणाली के अंतर्गत , बीते समय में किसान मोटा अनाज (मिलेटस) और दलहन की खेती करते थे। कुछ दशकों पहले, वहां के किसान मोनो क्रॉप (एक फसल) पद्धति के तहत नकदी फसल मूंगफली की खेती करते थे। चाहे कोई भी खेती करें उस फसल की पराली का भण्डारण करते थे और फिर उसका उपयोग चारे के रूप में बंजर और सामूहिक किया जाता। पर जैसे जैसे समय बदलता रहा, अनियमित बारिश, मोटे अनाज के निम्न आर्थिक लाभार्थ के कारण, मूंगफली के कम खपत इत्यादि कारणों ने यहाँ के किसानों को बहुत मुसीबतें झेलनी पड़ीं। कई साल तो ,किसान 'आरुद्रा करती" आने तक भी अगर मानसून की बारिश ना हो तो खेतों में मूंगफली की भी बुवाई नहीं कर पाते और ज़मीन परती ही रह जाती थी। इनके कारण चारे की विकट कमी जैसे परिस्थितियां उत्पन्न होती थीं।

अय्यावरीपल्ली के लिए साल 2018 बहुत ही खराब रहा, क्यूंकि अय्यावरीपल्ली ने इससे पहले कभी भी ऐसी संकट की स्थिति नहीं देखी थी, जिसने इस गाँव के पशु धन मुख्य रूप से इसकी दुधारू गायों के लिए बहुत बुरा था। ये साल चारा संकट के लिए बहुत कठिन परिस्थिति थी, जिसके कारण पूरे गाँव और वहां के निवासियों की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गयी थी। उस साल इस गाँव में 292 म म बारिश हुई , जो सामान्य वर्षा से 54% से कम था।

"...हालांकि हमारे पास चार एकड़ की बारानी भूमि (रेनफेड लैंड) थी , पर हम केवल दो एकड़ में मूंगफली की खेती करते थे। पर्याप्त निवेश क्षमता के अभाव में हमने दो एकड़ परती के लिए बाकी रखी थी। उन दो एकड़ की ज़मीन में कौन सी खेती करें,हमें ये समझ नहीं आ रहा था। अपने चार दुधारू गायों के दूध बेचकर हम अपने परिवार की पोषण करने लगे। साल दर साल बारीश के ना होने के कारण मुंगपाली की उपज में भी हमें बहुत नुक्सान उठाना पड़ा। इतनी मुश्किलों के बीच , साल 2018 के चारा संकट ने हमारी ज़िन्दगी और भी दूभर बना दी। हर दिन, हर पशु के लिए पांच किलो चारे के ज़रुरत पड़ती है, इस हिसाब से हमारे दुधारू पशुओं को सालाना कम से कम 9.71 टन चारे की ज़रुरत पड़ती है। मूंगफली और मोठे अनाज की परली से हमें 3.8 टन चारे की प्राप्ति होती और अधिकतम दो टन चारा अन्य स्त्रोतों से मिलता जिसके कारण हमारे पास लगभग 5.8 टन चारा उपलब्ध रहता था ; जो कि लगभग आठ महीनों तक पर्याप्त होता; पर उसके ख़त्म होने के बाद हमारे पास बचे हुए चार महीनों के लिए करीब 3.9 टन चारे की कमी रह जाती।..."

2018 के उस बीते हुए संकट की घड़ियों को याद करते हुए,चित्तूर ज़िले के अय्यावरीपल्ली समूह के बोयापल्ली गाँव के गिरिनाथ रेड्डी का कहना था... कि इन परिस्थितियों के कारण चारे में कमी की आपूर्ति के लिए उन्हें 32000 रूपए से भी ज्यादा

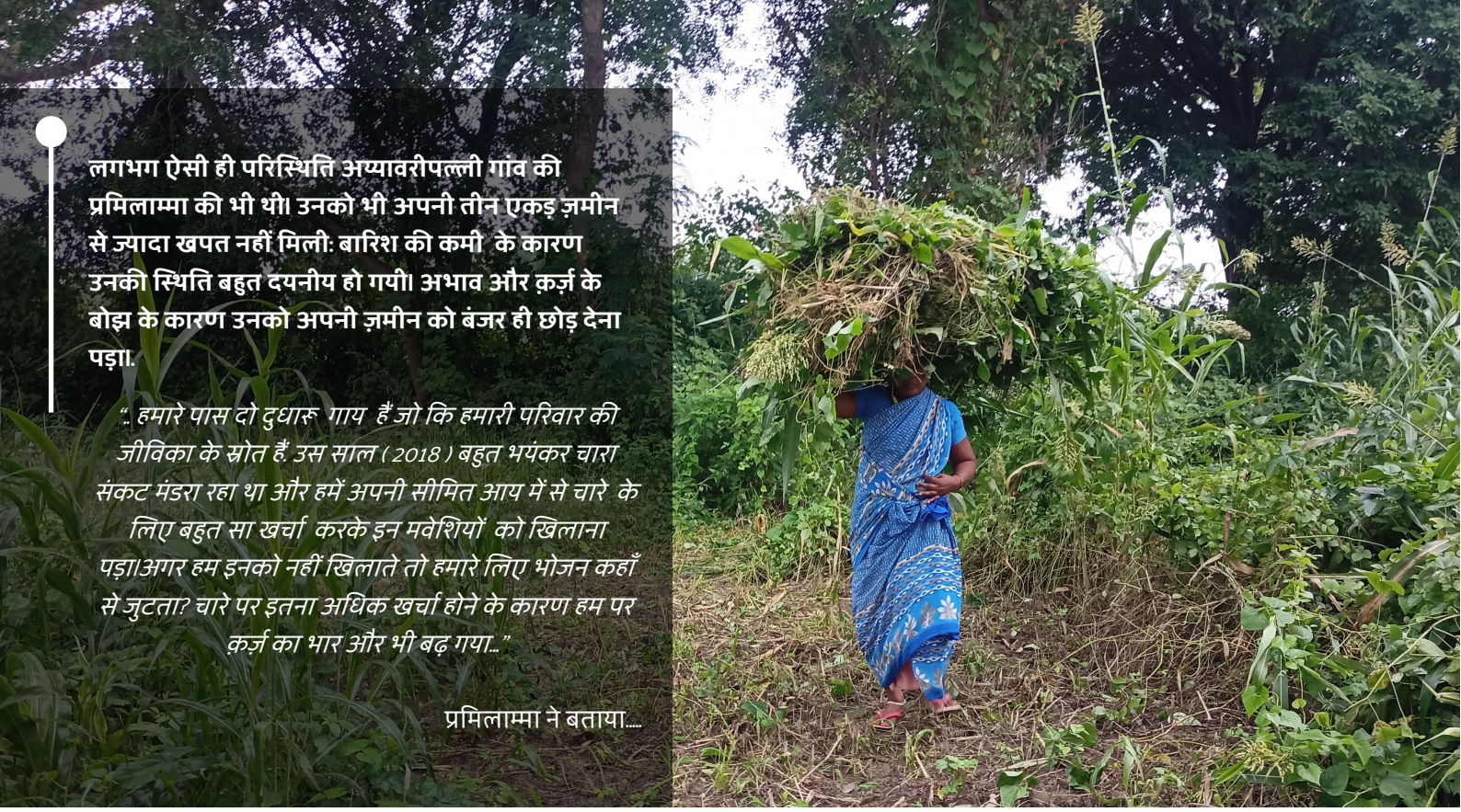

लगभग ऐसी ही परिस्थिति अय्यावरीपल्ली गांव की प्रमिलाम्मा की भी थी। उनको भी अपनी तीन एकड़ ज़मीन से ज्यादा खपत नहीं मिली: बारिश की कमी के कारण उनकी स्थिति बहुत दयनीय हो गयी। अभाव और क़र्ज़ के बोझ के कारण उनको अपनी ज़मीन को बंजर ही छोड़ देना पड़ा।

"..हमारे पास दो दुधारू गाय हैं जो कि हमारी परिवार की जीविका के स्रोत हैं. उस साल (2018) बहुत भयंकर चारा संकट मंडरा रहा था और हमें अपनी सीमित आय में से चारे के लिए बहुत सा खर्चा करके इन मवेशियों को खिलाना पड़ा।अगर हम इनको नहीं खिलाते तो हमारे लिए भोजन कहाँ से जुटता? चारे पर इतना अधिक खर्चा होने के कारण हम पर क़र्ज़ का भार और भी बढ़ गया..."

प्रमिलाम्मा ने बताया.....

चारा संकट के कारण अय्यावरीपल्ली और आस-पास के गांवों के किसानों को बहुत सारे मुश्किलों का सामना करना पड़ा।ऐसे कई किसान थे जिन्होंने चारा ना खरीद पाने की मजबूरी से अपने मवेशी भी बेचने पड़े , जिसे 'आपात बिक्री यानी 'डिस्ट्रेस सेल' कह सकते हैं।एक तरफ, चारे की कमी थी और दूसरी तरफ जो बचा कुचा दाना था उसको भी मवेशी, भेड़ और बकरी नहीं खा रहे थे क्यूंकि वो निम्न किस्म का दाना था।भारी दाम चुका कर मवेशी के लिए चारा खरीदने के बदले में , कई किसानों ने अपनी भेड़ और बकरियों को कम दामों में बेचना ही ठीक समझा।. ***प्रमिलाम्मा ने आगे बताया .....***

"...बीते कुछ वर्षों से , वासन संस्था यहां के कई गांवों में 'जीरो बजट प्राकृतिक खेती (यानी CNF) योजनाओं को शुरू किया। यहाँ के जन समुदाय के साथ चर्चा करने पर हमें इस चारा संकट के बारे में पता चला और हमें फिर इस समस्या का समाधान निकालने के विकल्पों को ढूंढने का प्रयत्न किया। .... इस परिस्थिति को इस समस्या की गंभीरता को समझने के लिए , हमने गाँव के स्तर पर 'फोकस ग्रुप मीटिंग' संघटित किये। गांववासियों से परिचर्चाओं बाद ये बात उजागर हुई, के 2018 के चारा संकट के कारण अय्यावरीपल्ली के लगभग सभी परिवार किसी ना किसी तरीके से प्रभावित हुए ...",

वासन (WASSAN) के स्थानिक 'टाइम लीडर' सुधाकर ने बताया.....

अय्यावरीपल्ली की कुल आबादी लगभग 354 है जिसमें 129 कुटुंब रहते हैं। अय्यावरीपल्ली का कुल भौगोलिक क्षेत्र फल 395 एकड़ है, जिसमें से 339एकड़ निजी है और बाकी का 56 एकड़ सार्वजनिक भूमि क्षेत्र के अंतर्गत आता है। निजी भूमि क्षेत्र के अंतर्गत में 124 एकड़ बारिश के पानी पर निर्भर है और केवल 39 एकड़ में ही सिंचाई की सुविधा है और बाकी 164एकड़ परती ज़मीन है।निजी भूमि के अंतर्गत में 36 एकड़ का वो क्षेत्र भी है, जो 'राजस्व पहाड़ियों के अंतर्गत है। परली से चारा मिलने के अलावा ,इन पहाड़ियों की तलहटी और ढलान भी चरागाह मवेशियों को चराने में मददगार साबित हुईं। इस गाँव में रहने वाले लोगों की आजीविका मुख्य रूप से अपनी दूधारु गायों पर निर्भर है। इस गाँव के प्रत्येक घर में कम से कम एक या दो गाय ज़रूर पाली जाती हैं : हालाँकि कुछ परिवारों ने अपनी आर्थिक शक्ति के चलते अधिक मवेशी भी पाले हैं। ये परिवार दूध की बिक्री करके सालाना औसतन 35,000 रूपये से 48300 रूपये तक कमा लेते हैं।

और ये सब उत्तम किस्म के चारे की उपलब्धता पर निर्भर करता है।

साल 2018 में अय्यावरीपल्ली गांव की स्थिति विश्लेषण करने के समय पर , यहां मवेशियों की कुल संख्या 735 गिनी गयी जिसमें मवेशियों के साथ सब जुगाली करने वाले पशु भी गिने गए। गाँव में औसतन रोज़ 2.6 टन चारे की आवशयकता थी , जो की सालाना 788.4 टन के करीब थी।

चारे का अभाव : गरीब परिवारों पर गंभीर प्रभाव

पशु खाद्य और चारे की कमी सतत पशुधन विकास के रास्ते के सबसे गंभीर अवरोध हैं , जिसका सीधा असर गरीब पशुपालकों के आय और आजीविका पर पड़ता है। मवेशियों को स्वस्थ और उत्पादक रखने के लिए हरित चारा ही उत्तम है, जिससे दूध का भी उत्पादन उतना हो, जितना अभिलषित है।पशु खाद्य , चारे की कमी जैसे अवरोध मवेशियों के सामर्थ्य को काम करते हैं और असर दिखाते हैं जिसके कारण उत्पादन में घटा हो जाता है और पशुधन हो भी हानि होती है,मवेशी की सख्या में गिरावट भी हो सकती है।प्रमाणों के आधार से ये स्पष्ट होता है, कि करीब 36% डेरी (दुग्धालय) के पशुओं में कमी का कारण (सालाना मूल्य शर्तों के आधार पर) खाद्य सम्बन्धी समस्याएं ही हैं और चारे और हरित चारे के अभाव के कारण जो अनुमानित नुक्सान होता है, वो क्रमशः 11.6% और 12.3% है। (बिरथल और झा 2005)। सूखे चारे की कमी की समस्या को कम करने और पूरा साल हरे चारे का प्रबंध करना पशुपालकों के लिए एक बड़ी चुनौती है क्यूंकि इनमें से अधिकाँश सीमान्त और लघु पशुपालक हैं, जो कि अपने बलबूते पर मवेशियों के लिए चारा ,दाना और खुराक उपलब्ध नहीं करा सकते हैं और कुछ कालांशों में उनको गंभीर अभाव और घाटे का भी सामना करना पड़ता है। पशु पालन और डेरी उद्योग के कार्यकारी समूह ने पहले ही पूर्वानुमान लगा या था कि, साल 2025 तक राष्ट्रीय स्तर पर हरित चारे की मांग और आपूर्ति में लगभग 65% का अंतर और सूखे चारे में मांग और आपूर्ति में 25 % का अंतर होगा।.

चारे के अभाव के कारण मवेशियों का उत्पादन कम होने लगता है और बिक्री योग्य दूध में भी गिरावट होती है। बढ़ती हुई आबादी के कारण खाने की कीमतें भी बढ़ गयी हैं जिसके चलते चारा उगाने के क्षेत्र को फैलाना लगभग नामुमकिन है। जिसके फलस्वरूप , भारत में (>44% खुराक के लिए) मवेशी अधिकतर अपने खाने के लिए फसल की पराली पर ही निर्भर रहते हैं।

(NIANP, 2003).

गर्मी के मौसम में चारे और पानी का अभाव बहुत ही कठिन है। जो चारा खरीदने की क्षमता रखते हैं वो उसको खरीदते हैं पर जो चारा खरीदने की क्षमता नहीं रखते उनको अपने मवेशी बेचने पड़ते हैं। ये संकट साल 2015 में शुरू हुआ था और उसके पश्चात आने वाले सालों में स्थिति और भी बिगड़ती चली गयी। सूखे के दौरान समस्या का समाधान करने के लिए ,सरकार ने मवेशी चरागाह संघटित किये पर ये ज्यादा मददगार नहीं था। अय्यावरीपल्ली गाँव में स्थति बहुत ही खराब थी क्यूंकि जर्सी गायों ये चारा पूरा नहीं पड़ रहा था। उन दिनों को यहाँ के किसान बखूबी याद करते हैं, जब उनके गाय और भेड़ तलहटियों पर जो भी कुछ चरने को मिलता था वो, अपनी भूख मिटाने के लिये खाते थे , यहां तक कि घृत कुमारी 'यानी एलो वेरा' के पौधे को भी अपना ग्रास बना लेते थे।

नागरिमडुगु भास्कर की दास्ताँ

उन परिस्थितियों की कहानी एक स्थानिक भेड़ पालक की ज़ुबानी। इस दलित समुदाय के व्यक्ति के पास ना तो कोई ज़मीन थी और ना ही कोई रोज़गार। अपनी पत्नी और दो बेटियों का भरण पोषण करने के लिए ये खेती के काम करता था। उसको एहसास हुआ कि इस तरह मजदूरी करने से वो कुछ भी ज्यादा नहीं कमा सकता जो उसके बच्चों की पढ़ाई और उनकी शादियों में काम आ सके। ये सोचकर वहीं के ज़मींदार दामोदर रेड्डी से उसने भेड़ों के झुण्ड को दिलाने में मदद की गुहार लगाई : ज़मींदार के साथ समझौते के अनुसार , भेड़ों के झुण्ड का रख-रखाव उसके ज़िम्मे था और अंततः झुण्ड में आधे भेड़ वो ज़मींदार को सौंप देगा। साल 2007 में दोनों के बीच समझौता हुआ और उसके अनुसार दामोदर रेड्डी ने 4.22 लाख रूपये में भेड़ों का झुण्ड ख़रीदा (जिसमें 50 भेड़ें और एक भेडा था)। उसके बाद से भास्कर और उसकी पत्नी उस भेड़ो को चारा कर उनका पालन कर रहे हैं। वो उस झुण्ड को वहां पास की परती ज़मीन में, सामूहिक ज़मीन पर और बारिश के दिनों में पास की पहाड़ियों पर चराने ले जाते हैं। पर गर्मी के मौसम में ये काम बहुत ही मुश्किल है। और तो और वर्षा ऋतू में भी बारिश की कमी के कारन उस भेड़ों के झुण्ड को चराने के लिए उनको बहुत दूर जाना पड़ता। परन्तु चोरी,परभक्षण, भोजन और आवास के अनुपलब्धता , घर-बार से ज्यादा समय तक दूर ना रह सकने की विवशता जैसे कारणों के चलता वो परिवार अधिकतर गाँव में ही रहने को मजबूर था। और फिर इसी दौरान चारे के कमी के संकट ने इस परिवार को जकड लिया। भास्कर ने अपनी समस्याओं के बारे में बताया ..... "..... कालाहस्ती के समीप, येरपेडू से मैंने दो ट्रेक्टर भर के चारा मंगवाया। प्रत्येक ट्रेक्टर चारे की लागत करीब 16,000 रूपए थी । 6000 रूपए खर्च करके मैं ने स्थानीय दूकान से कुल्थी दाल(हॉर्स ग्राम) का खेप भी ख़रीदा , अपने भेड़ों के खाद्य समस्या और रखरखाव की पूर्ती के लिए मुझे 38,000 रुपयों का अधिकतम खर्चा हुआ।" भास्कर जैसे व्यक्ति के लिए जो कि मजदूरी पर निर्भर है , ऐसे परिस्थिति का आना एक बड़ा आर्थिक संकट ही है। पर भास्कर को ये भी ज्ञात है की अगर वो ऐसा नहीं करता तो उसे कदाचित इससे भी बड़े आर्थिक संकट का सामना करना पड़ता , अगर उसके मवेशियों पर और कोई विपदा आती।

स्थानीय किसानों का कहना था, की साल 2018 में गाँव में सभी ने 202.5 टन चारा जुटाने के लिए 29.73 लाख रूपये की पूंजी लगाई। सुदूर श्रीकालाहस्ती से माल मंगवाया गया। 13 ऐसे भेड़ पालक परिवार थे जिन्होंने 3.87 लाख खर्च करके 25.5 टन चारा मोहय्या किया। लगभग 105परिवारों ने 25.86 लाख रूपए के पूंजी लगाकर 177 टन चारा ख़रीदा। साल 2017-19 के कालांश में सुदूर प्रांत जैसे श्रीकालाहस्ती और रायचोटी से इस गाँव के लोगों ने 98 लाख कीमत में चारा ख़रीदा। जिसमें प्रत्येक चारे ट्रक की कीमत 17000 से 21000 के बीच में थी। केवल मवेशियों की देखरेख और लालन-पालन के नाम पर पैसे की बहिर्वाह में गाँव को बड़ी कीमत चुकानी पड़ती।

मौजूदा बोरवेल की मदद से चरागाह का विस्तार -विकल्पों की खोज (रबी- 2018)

इस संकट की स्थिति को समझते हुए इस समस्या को सुधरने के लिए टीम 'वासन' (WASSAN) ने साल 2019 की रबी के बुवाई के समय के लिए विकल्पों को ढूंढना शुरू किया।गाँव वालों से परिचर्चा के दौरान ये पता चला, कि गाँव में 28 किसानों के पास बोरवेल की सुविधा है। जिनमें से 15 बोरवेल अच्छी तरह कार्यशील हैं।गर्मी के मौसम में, जिन किसानों के पास बोरवेल की सुविधा थी,वो उपलब्ध पानी के साधनों द्वारा, चारे की फसलों को उगा सके और अपने मवेशियों के खासी और चारा उपलब्ध करा पाए। इन फसलों को उगाने के लिए ये किसान 10 गुँठा ज़मीन में चारे की Co1 और Co2 किस्में उगा रहे थे।ऐसे विकल्पों पर विचार हुआ जिससे उपलब्ध पानी का सदुपयोग हो और चारे की समस्या से त्रस्त ज्यादा से ज्यादा किसानों को लाभ मिल सके ।फिर उन बोरवेल वाले किसानों के समक्ष उनकी चारा उगाने की ज़मीन का दायरा बढ़ाने एक प्रस्ताव रखा गया , जिससे स्थानीय तौर ही और भी चारा मिल सके।जिसके बदले में उन किसानों को उस ज़मीन पर जोताई करने के लिए सहायता का प्रस्ताव रखा (फी एकड़ 750 रूपए) और विभिन्न किस्म के बीज भी दिलाने का आश्वासन दिया गया।.

अंततः इन किसानों के बीच एक समझौते को , आगे बढ़ाया गया, जिसके तहत एक किलो चारे के एवज में पांच किलो घन जीवामृत देना तय हुआ। इस बात पर भी सम्मति हुई, कि चारा उगाने वाले किसान कम से कम दस किसानों को चारा उपलब्ध कराएंगे। कुल मिलकर, गाँव के 90 किसानों को आवश्यकता के अनुरूप चारा मोहय्या होने से लाभ हुआ। सब किसानों के बीच में ये पैदावार समान रूप से मिला और कुछ किसान तो और 10 किसानों को चारा देने की मदद का वादा करने के बावजूद नहीं कर पाए। इसका मुख्य कारण पूरे साल बोरवेल में पानी की कमी था। अधिकाँश किसान अलग-अलग मात्रा में केवल आठ-नौ किसानों को ही चारा दे पाए। उस अंतर को पाटने के लिए किसान कम लागत पर चारा खरीद सकते थे।

किसानों को चारा फसलों के मिश्रित बीज का वितरण

1 किलोग्राम	1 किलोग्राम	1/2 किलोग्राम
जवार	बाजरा	फील्ड बीन (बल्लार)

2 किलोग्राम	1/2 किलोग्राम
कुल्थी चना	लोबिया

चारा विकास के भूखंड

अन्य भूखंडों में भी परती ज़मीन का चरागाह में रूपांतरण (खरीफ 2019)

रबी के मौसम के दौरान किसानों के परती ज़मीन पर चारा की पैदावार, शुरुवाती अनुभवों, ने चारा समस्या को सुलझाने के लिए अय्यावरीपल्ली और अन्य समीपवर्ती गावों को एक नयी दिशा दी। क्यों ना सारी की सारी परती ज़मीन को गहन चारा उत्पादन के लिए प्राकृतिक खेती पद्धति को अपनाया जाए? इस विचार के चलते, खरीफ की बुवाई के समय पर यहां के किसानों ने आने वाली गर्मी में चारे की कमी को पूरा करने के लिए परती ज़मीन

"...गर्मी गर्मी के आने से पहले ही हमने इस संकट से निपटने और तैयार रहने की ठान ली। खरीफ बुवाई के दौरान ही हमने परती ज़मीन पर चारा उगाने का निश्चय कर लिया था। हमारा इरादा था कि हम बारिश के पाने का सदुपयोग करें और मौजूदा परती ज़मीन में चारा उपजायें। चारे का भरपूर वनस्पति विकास और उसके उगने के लिए ज्यादा से ज्यादा एक या दो अच्छी फुहारों का होना ज़रूरी है। ये कार्य और भी सरल हो जाता है,जहाँ मिश्रित फसल उगायी गयी हो और वो ज़मीन जहाँ पर ज्यादा और अधिक तेज़ी से पौधों की वृद्धि होती हो।इन सबके कारण चारा पौष्टिक चारा उपलब्ध हो सकता है, जो ज़रूरी ऊर्जा अनुपूरक युक्त होगा ।फिर हम एक स्थानीय पशु चिकित्सक (डॉक्टर) से मिले और चारे के सभी पौष्टिक तत्वों और खरीफ मौसम तक उनके उनके रख- रखाव के बारे में ,हमारे सभी संदेहों का निवारण किया।उस डॉक्टर ने हमें बताया, कि काटे गए चारे को गीले हरी उपज को धूप में सुखाने के स्थान पर उस चारे को छाया में सुखाएं तो .... चारे में से कम मात्रा में पौष्टिक तत्वों का हनन होगा.....और फसल की कटाई के बाद हमने उन के दिए सलाहों को माना..."

सुरेश कुमार, अय्यावरीपल्ली गांव के स्थानीय संसाधन व्यक्ति।

अय्यावरीपल्ली में व्यक्तिगत परती ज़मीन की पहचान कर के चारा के अंतर्गत खेतों की जुताई के लिए तैयार किये गए।वैसे,यहाँ के गाँव के निवासी 141 एकड़ ज़मीन में से 117.5 एकड़ परती ज़मीन में चारे के विभिन्न किस्मों की चारा फसलों को उगाने में सक्षम थे।उस कालांश में उन परती ज़मीन से करीबन 587.50 टन गीला चारा की उत्पत्ति हुई।इन भूमिहीन किसानों को , जिनको हारे की बहुत आवश्यकता थी ,उन्हें अपने खेतों में डालने के लिए 52000 किलोग्राम घनजीवामृतं का घोल मोहय्या करवाया गया।इस प्रयास के कारन दो से तीन महीनों तक के लिए गाँव के सभी मवेशियों के लिए 274.75 टन भरपूर पौष्टिक सूखा चारा उपलब्ध हुआ।इस प्रक्रिया के कारण, ना केवल गाँव की परती ज़मीन में जान सी फूँक दी गयी है , बल्कि, यहाँ के किसानों के लिए भी बहुत आर्थिक मददगार साबित हुई है ,क्यूंकि अब उनको सुदूर प्रांतों से ऊंची कीमत पर चारा खरीदकर मंगवाना नहीं पड़ता।इन प्रयासों के परिणाम देखकर , रायथू साधिकार्था संस्था ने इस उपक्रम तो ज़िले के अन्य गाँवों के समूहों में भी विस्तरित किया।

खरीफ मौसम के दौरान चार ग्राम समूहों के 504 किसानों की 641 एकड़ परती ज़मीन को चरागाहों में बदल दिया गया।

व्यापक योजना के तहत चारा खेती के बहुल विकल्प (खरीफ 2020)

चारा आय व्यन (बजट)

पूरे, 2019 साल में रबी और खरीफ मौसम के दौरान किये गए प्रयासों ने इस संकट से निपटने के लिए आवश्यक दूरदर्शिता प्रदान की और परिणाम उन्मुख कार्यवाही करने के लिए दिशा भी मिली।अय्यावरीपल्ली गांव के साथ-साथ और तीन गांव समूहों , जैसे कंदुरू ,बोम्मानचेरुवु और थांबलापल्ली में , चारे की कमी की समस्या को घटने के लिए,इस प्रक्रिया ने , वासन टीम को व्यापक कार्य योजना बनाने के लिए भी प्रेरित किया। उस योजना के तहत, विभिन्न साधनों द्वारा चारे की उपलब्धता और वास्तविक आवश्यकता को देखते हुए चारे की कमी /घाटे को कुल मौजूदा पशुधन के वार्षिक आधार पर परिमाणित किया। चारे की सालाना आवश्यकता 1577 टन थी; फसलों से चारे की उपलब्धता 513 टन थी और बाकी साधनों के द्वारा 350 टन चारा उपलब्ध था।इसके चलते 863 टन चारे की उपलब्धी हुई पर इसके बावजूद 714 टन चारे की कमी अभी भी थी (विवरण तालिका में है)। मोठे अनाज ,दलहन और सब्ज़ियों को उगाने के अलावा, इस अंतर को घटाने के लिए किसानों को चारा फसलें जैसे बाजरा. जोवर, लोबिया, कुल्थी चना और मसूर की दाल को भी उगाने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

चारे की सालाना उपलब्धी (खरीफ और रबी)

क्रम संख्या	स्रोत विवरण	खरीफ		
		कुल क्षेत्र (एकड़)	क्विंटल/ एकड़	कुल उत्पाद/ क्विंटल
A	वर्षा आधारित	130.70		2929.00
1.	मूंगफली	100.70	20.00	2014.00
2.	रागी	5.00	13.00	65.00
3.	जोवार	15.00	30.00	450.00
4.	कुल्थी चना	10.00	40.00	400.00
B.	सिंचित	32.00		1205.00
1.	धान	20.00	35.00	700.00
2.	मक्का	7.00	40.00	280.00
3.	चारा	5.00	45.00	225.00
	कुल	162.70		4134.00
	टन			413.40

क्रम संख्या	स्रोत विवरण	रबी		
		कुल क्षेत्र (एकड़)	क्विंटल/ एकड़	कुल उत्पाद/ क्विंटल
A	वर्षा आधारित			
1	धान	10	35	350
2	मक्का	5	40	200
3	टमाटर	8		
4	चारा	10	45	450
	कुल	33		1000
	टन			100
	चारे की कुल उपलब्धता खरीफ + रबी-टन			**513.4**

चारे की उपलब्धता और आवश्यकता मैं अंतर (पूर्ण पशुधन के आधार पर - टन में)

क्रम संख्या	मौजूदा पशुधन की श्रेणी	मौजूदा संख्या	रूपांतरण कारक	पशुधन इकाइयां	फ़ीड आवश्यकता (खाद्य)	इकाई प्रति दिन (किलोग्राम्)
1	कर्मशील पशु	9	1.33	12	5	59.85
2	सी बी गाय	577	1.33	767	5	3837.05
3	भेड़	850	0.2	170	2.5	425
कुल		**1436**				**4321.9**
सालाना कुल फीड (खाद्य)की आवश्यकता (तन)				4321.09	365	1577
फसलों से उपलब्ध चारा						513.4
अन्य स्रोतों से उपलब्ध चारा						350
कुल उपलब्ध चारा						863
चारे की कमी						714

चारे की खेतीकी मांग और आपूर्ति के अंतर से निपटने के लिए बहुत से विकल्पों को ढूँढा गया

1. 'व्यक्तिगत' तौर से **सिंचाई योग्य और परती ज़मीन में चारे** के विकास को बढ़ावा देना
2. **'सामूहिक' सांझी ज़मीन पर 'सीड ड्रिब्लिंग'** (छोटा सा गढ़ा निकलकर उसमें बीजों को रोपना) तरीके से चारे के विकास को बढ़ावा देना।
3. **लीज पर ली हुई परती भूमि पर चारे** के विकास को बढ़ावा देना।
4. **"दाना" तैयारी के लिए मोठे अनाज और दलहनों की खेती** को बढ़ावा देना।
5. **मेढ़ बंधी पर बायोमास 'चारे की फसलों'** की खेती करने के लिए को बढ़ावा देना।

परती ज़मीन की जुताई के लिए किसानों को आगत मौलिक आर्थिक सहायता (650 से 750 रूपए प्रति एकड़) दी गयी, इसके अतिरिकत उनको जोवर, बाजरा , कुल्थी चना, लोबिया और फील्ड बीन(बल्लर) के बीज (250-350 रूपए प्रति एकड़) उपलब्ध कराये गए। किसानों को प्राकृतिक एवं बायो उर्वरक जैसे घन जीवामृत और द्रव जीवामृत को तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। चारे के उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए खेती के मॉडल के अनुरूप ही आगे बढ़ाने के लिए स्थानीय समुदायों और किसानों को शामिल करके अलग अलग उपयुक्त व्यवस्थाएं और समझौते बनाये गए।

सहायक सघठन वासन(WASSAN) की फील्ड टीम एवं क्लस्टर स्तर के संसाधन व्यक्तिसमूह (CRPs) ने किसानों को तैयार एवं प्रोत्साहित करने के लिए सभी आवश्यक और औपचारिक कदम लिए जिससे इस समस्या से निपटने के लिए आधारित रणनीति बनायी। जिसके अंतर्गत-- 30 अप्रेल से पहले किसानों की पहचान और उनके ब्योरे इकठे करना ; ये सुनिश्चित किया जाए कि मई महीने के पहले हफ्ते तक चिन्हित खेतों की ज़मीन पर जोताई का सञ्चालन सम्पूर्ण हो; ये सुनिश्चित किया जाए कि चारे के लिए आवश्यक मात्रा में बीजों की खरीदारी एवं प्रबंध किया जाए और बीजों के पैकेट को किसानों को मोहय्या किया जाए; ये सुनिश्चित किया जाए समय पर बीजारोपण किया जाए; बीजों के अंकुरण के होने पर किसानों को उनके खेतों के विवरण, फोटो और जीपीएस लोकेशन इत्यादि के अनुसार दिए गए बिलों के आधार पर सहायता की भुगतान राशि दी जाए; ये सुनिश्चित किया जाए कि किसानों के खेतों में विभिन किस्मों के चारे के उत्पादों का फसल काटने के प्रयोग का आंकलन हो।

किसानों द्वारा ज़रूरी सिद्धांतों और स्थितियों का अनिवार्य पालन

- आवास गाँव में ही होना अनिवार्य;
- जीरो बजट प्राकृतिक खेती (ZBNF) के मूल भूत सिद्धांतों का पालन करना;
- चारे का उत्पादन एक एकड़ से कम क्षेत्र में नहीं होना चाहिए;
- योजना के तहत दिये गए आधार पर नए वित्तीय संसाधनों को लागू करना;
- सभी पांच किस्मों के चारे के बीजों की मिश्रित खेती करना अनिवार्य;
- खेत की मेढ़ों पर चारे के पौधों की कुछ किस्मों (जैसे अविसा, सुबबूल, रेशम इत्यादि) का रोपण;
- चरणबद्ध तरीके से चारे की कटाई और चारे को छाया
- में सुखाने के बाद उसका भण्डारण;
- फसल काटने के प्रयोग में सहयोग करना ,उपज का
- आंकलन और डेटा रिकॉर्ड करना;
- निर्धारित प्रबंधन प्रथाओं का पालन जैसे घन और द्रव जीवामृतं का उपयोग;
- कार्यक्रम के तहत सभी बैठकों और प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थिति अनिवार्य।

समीक्षात्मक प्रक्रिया कार्यान्वयन में शामिल व्यापक रणनीति के पहलु

- परती ज़मीन वाले किसानों की पहचान और उनको अपनी ज़मीन में चारा फसल उगाने के लिए प्रोत्साहित करना
- चारा संवर्धन की व्यवहार्यता और पहचान किये गए परती ज़मीन के क्षेत्रों का दौरा का आंकलन
- क्षेत्रवार निर्माण की सुविधा हेतु परती ज़मीन, सामान्य भूमि, दाना को बनाना और घनजीवामृतं की तैयारी और आपूर्ति के लिए सामान्य हित समूहों का गठन
- किसानों के बीच उचित समझौतों को बढ़ावा देना -- जैसे परती ज़मीन में चारा उगाना-- जल सुविधा युक्त किसानों के बीच समझौता, जिनके पास पशु धन था और जो घनजीवामृतं उपलब्ध करवा सकतें हैं, और 1किलग्राम चारे के एवज़ में 5 किलोग्राम घनजीवामृतं बाँट सकें–
- लीज्ड ज़मीन में चारा संवर्धन के मामले में--ज़मींदार और पट्टे पर भूमि लेने वालों के बीच समझौता
- चारे की उपज का अनुमान और क्षेत्र फल के आंकड़ों (डाटा) का संग्रह और समेकन
- बजट आवश्यकता का अनुमान-- जुताई, बीज और रखरखाव का खर्च इत्यादि के लिए सहायता
- उत्तम श्रेणी के विभिन्न किस्मों के चारे के बीजों की उपलब्ध करना; ये सुनिश्चित करना की खेत जोतने के लिए ट्रेक्टर भी उपलब्ध हों
- नियम और विनियम,भुगतान प्रणाली और किसानों के योगदान और परियोजना के लिए सहारा की सूचि तैयार करना
- ये सुनिश्चित करें कि घनजीवामृतं , बीजामृतं,द्रव वाजीवामृतं और छड़(गीली घास) की तैयारी और अमल हो
- विभिन किस्मों के चारे की फसलों की उपज का अनुमान करने के लिए किसानों के खेतों में फसल काटने के प्रयोग का निर्दिष्ट करना
- किसानों की ज़रुरत के आधार पर ये सुनिश्चित करें कि विभिन्न किस्मों के चारे की कंपित कटाई हो
- ये सुनिश्चित करें कि चारा छाया में ही सुखाया जाए और गर्मी के मौसम के चारा संकट को ध्यान में रखते हुए भण्डारण की प्रक्रिया का ध्यान रखें

‘व्यक्तिगत’ सिंचित एवं परती ज़मीन में चारा विकास को बढ़ावा

अय्यावरीपल्ली, कंदुरु, बोम्मा गाणी चेरु एवं थांबलापल्ली -इन चार गांवों के समूहों के 269 किसानों द्वारा ये पहल की गयी ,जिसके अंतर्गत 289.5 एकड़ ज़मीन का विस्तार था। करीब 1612.4 किलोग्राम बीज , इन किसानों को मोहय्या करवाए गए जिनमें पांच किस्म के बीज जैसे बाजरा, जोवार, कुल्थी चना, लोबिया और मसूर की दाल प्रमुख थे और जिनसे 584.04 टन चारे के उपज हो सकती थी।

व्यक्तिगत खेती की ज़मीन के बीजों के वितरण एवं चारे की पैदावार का विवरण

किसानों की कुल संख्या	क्षेत्र का विस्तार
269	289

बीजों का वितरण (किलोग्राम्)					
ज्वार	बाजरा	कुल्थी दाल	लोबिया	लौकी	कुल
434.3	432	497	112.3	137.6	1612.4

किसानों के कुल पशु धन की आबादी							चारे की उत्पत्ति	
बकरी	भेड़	भेंड़ा	HF गाय	गाय	बैल	कुल	क़्वींटल	टन
101	1011	0	184	759	17	2077	584043	584.04

सार्वजनिक (सांझी) ज़मीन पर ’सीड ड्रिब्लिंग द्वारा चारा विकास को बढ़ावा

अय्यावरीपल्ली गांव के आस-पास 15 एकड़ में फैली हुई दो पहाड़ियां (हिलॉक) थीं। पिछले कई सालों से यहाँ के किसान इनको चरागाहों की तरह इस्तेमाल करते आये हैं।इन पहाड़ियों पर चारा और भी मात्रा में उपलब्ध हो सके इस उद्देशय से इन किसानों ने सीड ड्रिब्लिंग की मदद भी ली, पर ये कोशिश इच्छित परिणाम नहीं दे पायी ।हालांकि, इन पौधों की देख रेख के जिम्मे का काम ,आसपास के किसानों को सौपा गया था, ,पर इसका सही तरीके से कार्यान्वयन नहीं हो पाया। खरपतवार (कीट) के कारण अंकुर दशा में ही सभी पौधे नष्ट हो गए,जिससे कोई भी परिणाम हासिल नहीं हो पाया।

'लीज्ड फॉलो लैंड्स (पट्टे पर ली हुए परती ज़मीन) पर चारे के विकास को बढ़ावा

इस प्रक्रिया को मुख्यतः उस परिवारों के लिए शुरू किया गया किनके पास मवेशी तो थे परन्तु उनके पास चारा उगाने के लिए ज़मीन नहीं थी। इस प्रोग्राम का मुख्य उदेश्य ही ये था कि ऐसे परिवारों के लिए सतत व्यवस्था की जाए जिससे वो अपने मवेशियों के लिए चारे का इंतेज़ाम कर सकें, उन्हें प्रेरित करके थोड़ी ज़मीन लीज़ पर लेकर वो अपने मवेशियों के लिए वहां चारा उगा सकें। ऐसे परिवार जो चारे को खरीदने के लिए बहुत बड़ी रकम खर्च कर रहे हैं , जो गर्मी के मौसम में उन पर बड़ा बोझ बनता है।

जब वे अपने मवेशी को घर से दूर चराने ले कर जाते तो उन्हें और भी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता , जैसे चोरी, शिकार/परभक्षण और अन्य परिवार से जुडी समस्याएं । इस प्रक्रिया से ये उम्मीद थे, कि ये इन सभी समस्याओं का कुछ हद्द तक निवारण करने में सक्षम होगी और परिवार अपने अपने घरों में गांव में ही रहकर अपने मवेशियों की देखभाल कर सकेंगे। लीज (पट्टे) पर ज़मीन लेने की प्रक्रिया को सहेज करने के लिए, इन परिवारों के साथ सामान्य हित समूह *(Common Interest Groups)* का गठन किया गया जो उसपर होने वाले खर्चे को भी सब में बाँट ने मददकर सकता था।

लीज़ पर लिए परती ज़मीन के बीजों के वितरण एवं चारे की पैदावार का विवरण

किसानों की कुल संख्या	क्षेत्र का विस्तार
53	73

बीजों का वितरण (किलोग्राम्)					
जोवार	बाजरा	कुल्थी दाल	लोबिया	लौकी	कुल
110	109.5	125.5	26.5	35.3	406.3

किसानों के कुल पशु धन की आबादी							चारे की उत्पत्ति	
बकरी	भेड़	भेंड़ा	गाय	HF गाय	बैल	कुल	क़्वींटल	टन
0	340	0	2	188	1	531	158582	158.5

नागरिमाडुगु भास्कर एक ऐसे मवेशी पालक हैं जो सहारे के लिए बहुत उतावले थे। सात और भूमिहीन परिवारों के साथ उसने अय्यावरीपल्ली गांव में एक गुट बनाकर 16 एकड़ ज़मीन ली। ये ज़मीन पिछले दस साल से बंजर थी। ज़मींदार को इस ज़मीन को लीज़ में लेने के लिए,500 रूपए पैर एकड़ के हिसाब से 8000 रूपए चुकाए गए।गुट के हर सदस्य ने इस पूंजी में अपना हिस्सा दिया। उसके अतिरिक्त इन सदस्यों ने 12,500 रूपए की अधिक राशि उस ज़मीन की साफ़-सफाई और वहां की झाड़ियाँ निकाल दीं। उस ज़मीन की जोताई में उन्होंने 25,600 रूपए खर्च किये, जिसमें से 8000 रूपए उनको कार्यक्रम के द्वारा समर्थन में मिले।बाकी राशि उन्होंने अपनी तरफ से अदा कर दिए। वैसे ही, इस गुट को 240 किलो बीज पर 9600 रूपए व्यय किये और कार्यक्रम की ओर से 5600 रूपए की मदद मिली। कुल मिलकर, इन्होनें उस बंजर ज़मीन को उपजाऊ बनाने के लिए 96800 रूपए का कुल खर्चा हुआ ,जिसमें से प्रोग्राम के तरफ से 12,000 रकम मिली और 84800 रूपए की बाकी रकम इन लोगों ने मिलाकर चुकाई। इनकी मेहनत और लागत के कारण उनको वांछित परिणाम भी मिले और उस बंजर भूमि से 32 टन चारे की खेती की गयी। उनके अनुमान के अनुसार, इस मुहीम में करीब 2,92,000 की लागत लगी। ये लागत, लाभ शर्तों के अनुसार 1:3 अनुपात में है।

'दाना' बनाने के लिए मोठे अनाज और दलहन की खेती को प्रोत्साहन

किसानों से परिचर्चा के दौरान, ये पहचान हुई कि ऐसे कुछ किसान थे जो बाहर बाज़ार से 'दाना' खरीदने के लिए एक बड़ी रकम चुका रहे थे। ये दाना मवेशियों को पूरक पोषक आहार के रूप में दिया जाता है। इस पूरक के एक पैकेट की कीमत बाजार में 800-900 रूपए की बिकती है। ऐसे किसानों की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए , चारे के खेती के साथ साथ , ज़मीन के कुछ हिस्से पर मोठे अनाज और दलहन की खेती के विचार को आगे बढ़ाया गया। इनमें से सभी किसानों को अपनी ज़मीन के करीब 10-20 सेंट में इन फसलों को लगाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। साधारणतया ,फसल के बीच में चारे के फसलों की कटाई घास के जैसे चरणों में होती है। दाने के लिए उगाई गयी फसलें ,चारे की फसलें से अलग होती हैं ,जिनमें ये अनाज के दाने पूरे होने तक उगाते हैं। ये अनाज एक अच्छे किस्म का खाद्य मिश्रण बन सकता है जब इसमें नमक, खनिज मिश्रण और धान की भूसी मिलाते हैं। ये अपने आप से एक अच्छे खाद्य मिश्रण बना सकते हैं जिसकी लागत 100 रूपए से भी कम है। अनुमान लगया गया कि हर एक किसान को 15 -20 सेंट ज़मीन से कम से कम दस बोरी चारा मिलता ,जो के दो-तीन पशुओं के लिए चार-पांच महीनों तक पर्याप्त होता। इस उदेश्य को ध्यान में रखते हुए,78 किसानों ने इस प्रक्रिया को 108.5 एकड़ ज़मीन में अपनाया और करीब 594 किलो बीज दिए गए। पर उनमें से अधिकाँश आखिर तक नहीं रुक पाए। केवल दस-बारह किसान के अलावा ,और सभी ने फसल के बीच में चारे की कटाई कर दी।

खेतों की मेढ़ पर बायोमास चारे के पौधों के बढ़ावा

इस गतिविधि को बढ़ावा खेत की मेढ़ों का उपयोग चारा उगाने के लिए किया गया। बीजों की ड्रिब्लिंग करीब 115 एकड़ ज़मीन पर की गयी जो की 99 किसानों की थी। इस योजना के लिए छे किलो बीज की लागत लगी। कीट -खतपतवार के कारण इस योजना ने भी अच्छे परिणाम नहीं दिए।

आखिरकार अंतर मिट गया

पांच प्रस्तावित कार्यक्रमों में से ,तीन चारा उत्पादन में इच्छित परिणाम लाने में सक्षम थे।चारे के उत्पादन के लिए व्यक्तिगत खेती करने वाली भूमि, परती ज़मीन और वो ज़मीन जो लीज़ पर ली गयी थी ,उन में से इच्छित परिणाम बिना किसी निवेश समर्थन के पूरे हों। अंततः इन चार गाँवों के समूह से 74262 टन चारा संचयी उत्पादन हुआ, जो कि संकट के दौरान सभी गायों, भेड़ और अन्य सभी पशुओं के लिए पर्याप्त था।

लीज़ पर ली हुई परती ज़मीन के लिए बीज वितरण और चारे की पैदावार का विवरण

क्रम संख्या	समूह का नाम	निजी खेत			लीज़ के खेत					
		किसानों की संख्या	एकड़	चारा उत्पत्ति (टन)	किसानों की संख्या	एकड़	चारा उत्पत्ति (टन)	किसानों की संख्या	एकड़	चारा उत्पत्ति (टन)
1	अय्यावरीपल्ली	103	125	247.72	13	32	70.74	116	157	318.46
2	बोम्मानचेरुवु	92	93.5	169.66	26	26	57.1	118	119.5	226.76
3	कंदुर	54	52.5	125.72	10	10	19.43	64	62.5	145.15
4	थांबलापल्ली	20	18.5	40.94	4	5	11.31	24	23.5	52.25
	कुल	269	289.5	**584.04**	53	73	**158.58**	322	362.5	**742.62**

फसल के शुरुवाती काटने के प्रयोगों के अनुसार (परिपक्व होने से १५ दिन पहले) अलग अलग युक्तियों के मिश्रण में ये पाया गया कि पैर एकड़ कुल्थी दाल का सूखा चारा महज़ 2400 किलोग्राम था जो सबसे कम था जबकि जोवार की उपज सबसे अधिक 4800 किलोग्राम प्रति एकड़ थी।अनुदार अनुमान के अनुसार, सूखे चारे की प्रति एकड़ की उपज 2000 किलोग्राम होती है। परती ज़मीन पर चारे की खेती करने के लिए,भूमिहीन किसान जिसके पास ज़मीन तो नहीं थी पर मवेशी थे,उनको 2400 की कीमत का चारा और 840 रूपए के कीमत का घनजीवामृतं दिया गया। अगर हम हरित चारे के मूल्य लगाएं तो प्रति टन 5000 रूपए का हिसाब लगाएं तो कुल ३७१४ लाख रूपए का हरित चारे के पैदावार हो पाया वो भी मात्र ०९२ लाख रुपयों (जोताई + बीज आधार) की लागत पर।

वृद्धिशील विवरणी

कुछ साल पहले, आन्ध्र प्रदेश के अय्यावरिपल्ली गांव में पशुधन की मजबूरन बिक्री बढ़ गयी थी; अब स्थिति बदल कर उत्पादक पशुओं की संख्या में बढ़ौतरी आयी है। 2018 में चरम संकट के दौरान, अय्यावरिपल्ली गांव में कुल 256 दुधारू गायें और 600 भेड़ें थीं। अभी गायों की संख्या बढ़कर 430 हो गई है और भेड़ों की संख्या लगभग 1000 हो गई है; यह संख्या पिछले 2-3 वर्षों में बेचे गए लगभग 200 मेढ़ों के बावजूद है। जो मेढ़े बीके है, उससे भी अच्छे स्वस्थ और वज़न के कारन अच्छी कीमत मिली।

अय्यावरीपल्ली में कुछ वर्ष पहले मजबूरी में आपात बिक्री का सहारा लेना पड़ा; पर अब ये स्थिति बदल गयी है और अब उत्पादक जानवरों की सख्या बढ़ गयी है। साल 2018 के चरम संकट के दौरान, अय्यावरीपल्ली गाँव में 256 दूधारू गाय और 600 भेड़ थे और अब गायों की सख्या बढ़कर 430 और भेड़ों की संख्या बढ़कर 1000 तक पहुँच गयी; ये सख्या ,पिछले दो-तीन साल में बेचे गए 200 भेंड़ों से अलग है। इन भेंड़ों के अच्छे वज़न के कारन इन को बेचने पर इनकी बहुत अच्छी कीमत मिली। दूध की पैदावार में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जो कि पिछले सालों से चार-पांच गुणा अधिक है : साल 2018 में अय्यावरीपल्ली गाँव में केवल एक दूध संग्रह केंद्र था, जिसमें प्रति दिन 175 -200 लीटर दूध इकट्ठा होता था। और अब यहां इस गाँव में पांच दूध संग्रह केंद्र है जो कि निजी डायरी कंपनियां द्वारा चलाई जातीं हैं। अब इन संग्रह केंद्रों द्वारा रोज़ 1000 लीटर दूध इकठा किया जाता है। अत:, इस चारे की मुहीम के कारन ना केवल लागत ही कम हुई परन्तु वहां की स्थानीय समुदाय की आय में बहुत वृद्धि हुई।

साल 2021 ,खरीफ मौसम के दौरान, कार्यक्रम से समर्थन के कारण ,करीब 400 किसानों ने 400 एकड़ में चारे की खेती शुरू की। इसके अलावा,इन चार ग्राम समूहों के 195 किसानों ने अपने बलबूते पर 222 एकड़ ज़मीन पर यही काम शुरू किया ; कुल मिलकर इस प्रयत्नों द्वारा करीब 622 एकड़ के विस्तार में चारे की खेती हुEE, जो इस बात का प्रमाण था कि इन किसानों ने इस सिद्धांत की क्षमता को स्वीकारा है , जिसमें इस अनूठे ढंग से चारे के अनेक किस्मों खेती करने पर गर्मी के दिनों में ,उन मवेशियों का किसी भी प्रकार के संकट से बचाव हो सकता है। अब ये लोग,तीन साल पहले के संकट को फिर से ना आये, उसके लिए कोई कसर नहीं छोड़ रहे।

चित्तूर में वर्ष वार चारा संवर्धन का ब्यौरा

क्रम संख्या	समूह का नाम	ग्रामों की संख्या	रबी 2018		खरीफ		रबी 2019	
			किसानों की संख्या	एकड़	किसानों की संख्या	एकड़	किसानों की संख्या	एकड़
1	अय्यावरीपल्ली	6	19	19.00	240	357	32	40
2	बोम्मानचेरुवु	9	8	10.00	147	177	16	22
3	कंदुर	8	15	16.50	82	75	20	22
4	थांबलापल्ली	6	6	5.00	35	32	10	15
5	कोटवारीपल्ली	3	20	20.00	0	0	0	0
	कुल		**68**	**70.50**	**504**	**641**	**78**	**99**

क्रम संख्या	समूह का नाम	ग्रामों की संख्या	रबी 2018		खरीफ		खरीफ2021			
			किसानों की संख्या	एकड़	किसानों की संख्या	एकड़	कार्यक्रम समर्थन के साथ		किसान के निजी खेत	
							किसानों की संख्या	एकड़	किसानों की संख्या	एकड़
1	अय्यावरीपल्ली	6	276	276	102	95	**100**	**100**	**84**	**104**
2	बोम्मानचेरुवु	9	192	200	81	67	**100**	**100**	**42**	**54**
3	कंदुर	8	190	199	64	58	**100**	**100**	**39**	**36**
4	थांबलापल्ली	6	125	125	20	17	**100**	**100**	**30**	**28**
5	कोटवारीपल्ली	3	0	0	0	0	**0**	**0**	**0**	**0**
	कुल		**783**	**800**	**267**	**237**	**400**	**400**	**195**	**222**

"...अब हमारे गाँव के मवेशी इस बहुल प्रकार के चारे को इतने प्यार के साथ स्वाद ले कर खा रहे हैं जैसे हम लोग बिरियानी खाते हैं! इस चारे की पोषण शक्ति बहुत उत्तम श्रेणी की है , जो कि उनके द्वारा दिए गए दूध की तंदुरुस्ती और गुणवत्ता में भी दिखता है। स्थानीय दूध संग्रह केंद्र नियमित रूप से दूध के वसा शक्ति के गुणों और अनुपात इत्यादि को जांचते हैं। दूध की गुणवत्ता के बारे में वो हमेशा सकारात्मक टिप्पणियां ही देते हैं। स्थानीय पशु चिकित्सक भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि इन दूधारू गायों के स्वास्थ्य में भी वृद्धि हुई है। ऐसा भी एक प्रसंग हुआ, जिसमें एक गाय को प्राणघाती रोग से बचाया जा सका (इस रोग को स्थानिक लोग 'परबोईना' कहते हैं),इस घटना ने स्थानिक पशु चिकित्सक को भी आश्चर्य में डाल दिया। इससे पहले हमारे गाँव में इस बिमारी से एक भी पशु नहीं बच पाया था। पशु चिकित्सक ने कहा कि कदाचित इस स्वास्थ्य की बहाली का कारण तंदुरुस्त और पौष्टिक चारे की वजह से था। अब हमें एहसास हुआ कि बहुल किस्म के चारे ने हमें बहु आयामी लाभ दिए हैं।..."

- राजा रेड्डी , किसान, अय्यावरीपल्ली ग्राम

"...बहुत सालों से हमारा परिवार भेड़ पालन का काम करते आये हैं। वैसे हम भेंडे बेचते हैं जो हमारे पास ज्यादा हैं और भेड़ों को अपने पास रख लेते ताकि हमारे भेड़ों के झुण्ड की संख्या बढ़ जाए। पुराने दिनों में एक जोड़ी भेंड़ों की कीमत 10000 से 12000 रूपए के बीच में थी। इन दिनों जो चारा और खाद्य हमने अपने भेंड़ों को खिलाया है, उससे उनका वज़न तेजी से बढ़ाने में भी मदद मिली है। पिछले दो सालों में मैंने करीब दस जोड़ी भेंड़ों को बेचा है और मुझे 14000 से15000 रूपए के बीच की रकम मिली है। ये तो अच्छा हुआ कि हमने जल्दी ही इस बात पर ध्यान दिया की भेड़ का वज़न अच्छी तरह से बढ़ा है। आखिरकार अच्छी खुराक ही तो जो इन जानवरों के स्वास्थ्य को निर्धारित करती है !!..."

- आनंद, भेड़ पालक, अय्यावरीपल्ली गाँव

इस अनुभव से हम क्या सीख सकते हैं

एक छोटा सा सहारा भी एक सकंट को एक सुअवसर में बदल देता है!

समुदाय के सदस्यों के बीच मध्यस्ता जिसके चलते वो ज़मीन, श्रम और खाद जैसे पदार्थों को एक दुसरे से बाँटें और चारा आय व्ययन से संकट और विकल्प पारदर्शी बन सके, बातचीत और समाधान को आगे बढ़ाना, प्रारंभिक प्रयोग के गहन समर्थन ,और ज़मीनी स्तर पर लोग उन परिणामों को देख सकें , प्रकृतिक खेती करने की पद्धति जिन पर कम निवेश लागत और उच्च लागत की वापसी, समुदायों को घाटे से आधिक्य की ओर ले जाती है।अय्यावरीपल्ली के अनुभव से ये सीख मिली है कि और वो मॉडल जो आस पास के अनेक गाँवों में भी विस्तृत हुई।

ये अनुभव सामरिक मुख्यधारा के लिए एक विकल्प प्रदान करता है जो परती ज़मीन से पशु पालक के गेहन समर्थन को इस केस स्टडी को आगे बढ़ाता है। ऐसी ज़मीन की सिंचाई उत्पादकता भी बढ़ाती है। घन/ द्रव जीवामृतं , बारिश से पहले गीले घास को सूखाना, मवेशियों का बाड़ा बांधना, बहु प्रजाति फसल मिश्रण - जो अनाज, मोटा अनाज, दलहन को मिलाकर एक संतुलित आहार बनता है जो कि प्राकृतिक खेती पद्धति के उत्पादन के तरीके हैं जो कि जीवन बचाने वाले सिंचाई के पहुँच तकनीकी आयाम हैं।.

ऐसी योजना जिससे अनेक लाभ हो :

1. परती ज़मीन को पुनर्जीवित करना और प्राकृतिक तरीकों से निजी ज़मीन का भूमि अवक्रमण का अवरोध करना,
2. चारे की कमी की नियमितता और ऐसी कमी जो मौसम की ज्यादितियों के कारण हो उनको संभालना,
3. अर्थव्यवस्था और मवेशी की विविधता की सहायता,
4. बढ़ती हुई उत्पादक्ता और मवेशियों के उत्पादकों का ऊंचा मूल्य और सबसे ऊपर,
5. सामूहिक कार्यक्रम जो कि सहयोगी समुदाय का मार्गदर्शन करें।

ऐसे अवसरों में निवेश से उच्च लागत लाभ का अनुपात करीब 1 :4 होता है और, उच्च सामाजिक लागत लाभ अनुपात और भी ज्यादा होता है, जो सूखा ग्रस्त इलाके जो बारिश पर निर्भर हों।

WATERSHED SUPPORT SERVICES AND ACTIVITIES NETWORK (WASSAN)

Plot Nos. 685 & 686, Narasimha Swamy Colony, Street No. 12, Nagole,

Hyderabad - 500 068, Telangana, India

Mail us to mail@wassan.org | Visit us @ www.wassan.org